ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाये रहे हैं। अभी समझते हो कि हम सब रूहानी बेहद के बाप के बच्चे हैं। उनको बापदादा कहा जाता है। जैसे तुम रूहानी बच्चे हो वैसे यह (ब्रह्मा) भी रूहानी बच्चा है शिव बाबा का। शिव बाबा को रथ तो चाहिए ना। इसलिए जैसे तुम आत्माओं को यह रथ आरगन्स मिले हुई हैं कर्म करने लिए वैसे शिव बाबा का भी यह रथ है। क्यों कि यह कर्मक्षेत्र है। यहाँ कर्म करना होता है। वह है घर जहाँ आत्माएं रहती हैं। आत्मा ने जाना है हमारा घर है शान्ति धाम। वहाँ यह खेल नहीं होता। बत्तियाँ आद कुछ नहीं होती। सिर्फ आत्माएं रहती हैं। यहाँ आती हैं पार्ट बजाने। तुम्हारी बुद्धि में है यह बेहद का ड्रामा है। जो भी एक्टरस हैं उन्हों की एक्ट शुरू से लेकर अन्त तक तुम बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो। तुम जानते हो यहाँ कोई साधु सन्त आद नहीं समझाते हैं। यहाँ हम बच्चे बेहद के बाप पास बैठे हैं। इस जिस्म को भूलते जा रहे हैं। अब हमको वापस जाना है। पवित्र भी जरूर बनना है। आत्मा को। ऐसे नहीं कि शरीर भी यहाँ पवित्र बनना है। नहीं, आत्मा ही पवित्र बनती है। शरीर पवित्र तब बने जब 5 तत्व भी सतोप्रधान हों। अब तुम्हारी आत्मा पुरुषार्थ कर पावन बन रही है। वहाँ आत्मा और शरीर दोनो पवित्र होते हैं। यहाँ नहीं हो सकता। आत्मा जब पवित्र बन जाती है तो पुरानी शरीर छोड़ देती है। फिर नये तत्वों से नई शरीर बनती है। तुम जानते हो हमारी आत्मा बेहद के बाप को याद करती है। याद करते हैं या नहीं करते हैं यह तो हरेक को अपने से पूछना है। अभी टाईम बहुत है। ऐसे नहीं कि पढ़ाई पूरी हुई। नहीं। पढ़ाई का सारा मदार है योग पर। पढ़ाई तो सहज है, समझ गये कि सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। मुख्य है ही याद की यात्रा। यह है अन्दर गुप्त। देखने में थोड़े ही कुछ आता है। बाबा नहीं कह सकेंगे कि यह बहुत याद करते हैं। हाँ ज्ञान के लिए बताये सकते हैं। कि यह ज्ञान में बहुत तीखा है। याद की कुछ देखने में नहीं आता है। ज्ञान मुख से बोला जाता है। याद तो है अजपा याद। जाप अक्षर भक्ति का है। जाप माना कोई का नाम जपना। यहाँ तो आत्मा को अपने बाप को याद करना है। तुम जानते हो हम बाप को याद करते2 पवित्र बनते2 मुक्तिधाम-शान्ति धाम जाये पहुँचेंगे। ऐसे नहीं कि ड्रामा से मुक्त हो जावेंगे। मुक्ति का अर्थ है दुख से मुक्त हो शान्ति धाम जाये फिर सुखधाम में आवेंगे। पवित्र जो बनते हैं वह सुख भोगते हैं। अपवित्र मनुष्य उन्हों की खिज़मत करते हैं। पवित्र की महिमा है। इसमें ही मेहनत है। आँखें बड़ा धोखा देती हैं। बाबा जानते हैं बहुत धोखा खाते हैं। ब्राह्मणियाँ भी धोखा खाये देती हैं गिर पड़ती हैं। नीचे उपर तो सब को होना है। ब्रह्मचारी सब लगती हैं। वास्तव में प्रैक्टीस सब को करना चाहिए। समझाने की ऐसी प्रैक्टीस करते नहीं हैं। समझते हैं बस ब्राह्मणी को ही समझाना है। बाबा कहते हैं बच्चे भी समझाये सकते हैं फिर भी कहाँ माता गुरु चाहिए। क्यों कि अब माता गुरू का सिलसिला चलता है। आगे पिताओं का था। अभी पहले2 कलश माताओं को मिलती है। माताएं मैजोरिटी में हैं। कुमारियाँ राखी बन्धती हैं पवित्रता के लिए। भगवान कहते हैं काम महा शत्रु है। इन पर जीत पहनो। राखी पवित्रता की निशानी है। वह लोग राखी बन्धते हैं पवित्र तो बनते नहीं हैं। वह सब है आर्टिफिश्यल। राखी कोई पावन बनाने वाली नहीं है। इसमें तो ज्ञान चाहिए। अभी तुम राखी बान्धते हो अर्थ समझते हो यह प्रतिज्ञा कराते हैं। जैसे सिख लोग को कंगण निशानी होती है। वास्तव में इसका भी अर्थ है पवित्र बनने का कंगण। परन्तु वह कोई पवित्र रहते नहीं हैं? पतित को पावन बनाने वाला एक है बाप है। गुरुलोग कोई शास्त्रों द्वारा पावन नहीं बनाये सकते। सर्व की सदगति दाता शास्त्र वा पानी की गंगा नहीं है। सर्व का सदगति दाता एक ही है। सो भी देहधारी नहीं। पानी की गंगा तो इन आँखों से देखने में आती है। बाप जो सदगति दाता है उनको इन आँखों से नहीं देखा जाता। आत्मा को कोई भी देख नहीं सकते हैं। वह तो अन्दर बैठी है। आत्मा निकल जाती है। बाँधो से समझते हो। इन आँखों से नहीं देख सकते। वह सूक्ष्म चीज है। शरीर तो देखने में आता है। आकाश आद यह सब देखने में